बंकचूल (व्रत नियम का फल)

प्राचीनकाल में ढींपुरी नाम का एक समृद्ध नगर था। वहाँ के राजा विमलयश न्यायप्रिय और प्रजापालक राजा थे। उनकी रानी कमलावती जिनधर्म पर आस्था रखने वाली धर्मपरायणा स्त्री थीं। उनके पुष्पचूल और पुष्पचूला नामक पुत्र-पुत्री थे। सरल स्वभावी राजा-रानी अपने बच्चों को बहुत प्यार करते थे।

अत्यंत लाड़-प्यार के कारण राजकुमार बचपन से ही बिगड़ने लगा और धीरे-धीरे बुरी आदतों में पड़ गया। उसकी बुद्धि हमेशा उल्टे कार्यों में ही चलती थी।

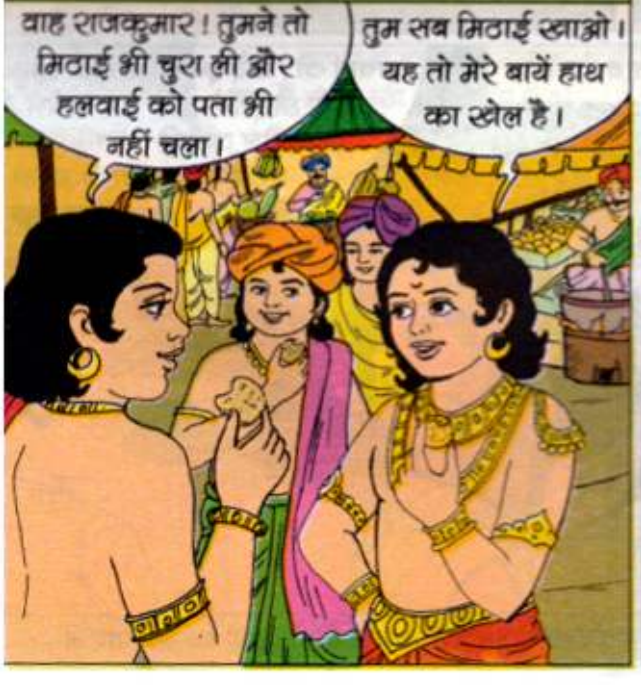

कुछ बड़ा होने पर राजा ने राजकुमार व राजकुमारी को अध्ययन हेतु गुरुकुल में भेज दिया। एक दिन वहाँ के आचार्य ने विद्यार्थियों से कहा—

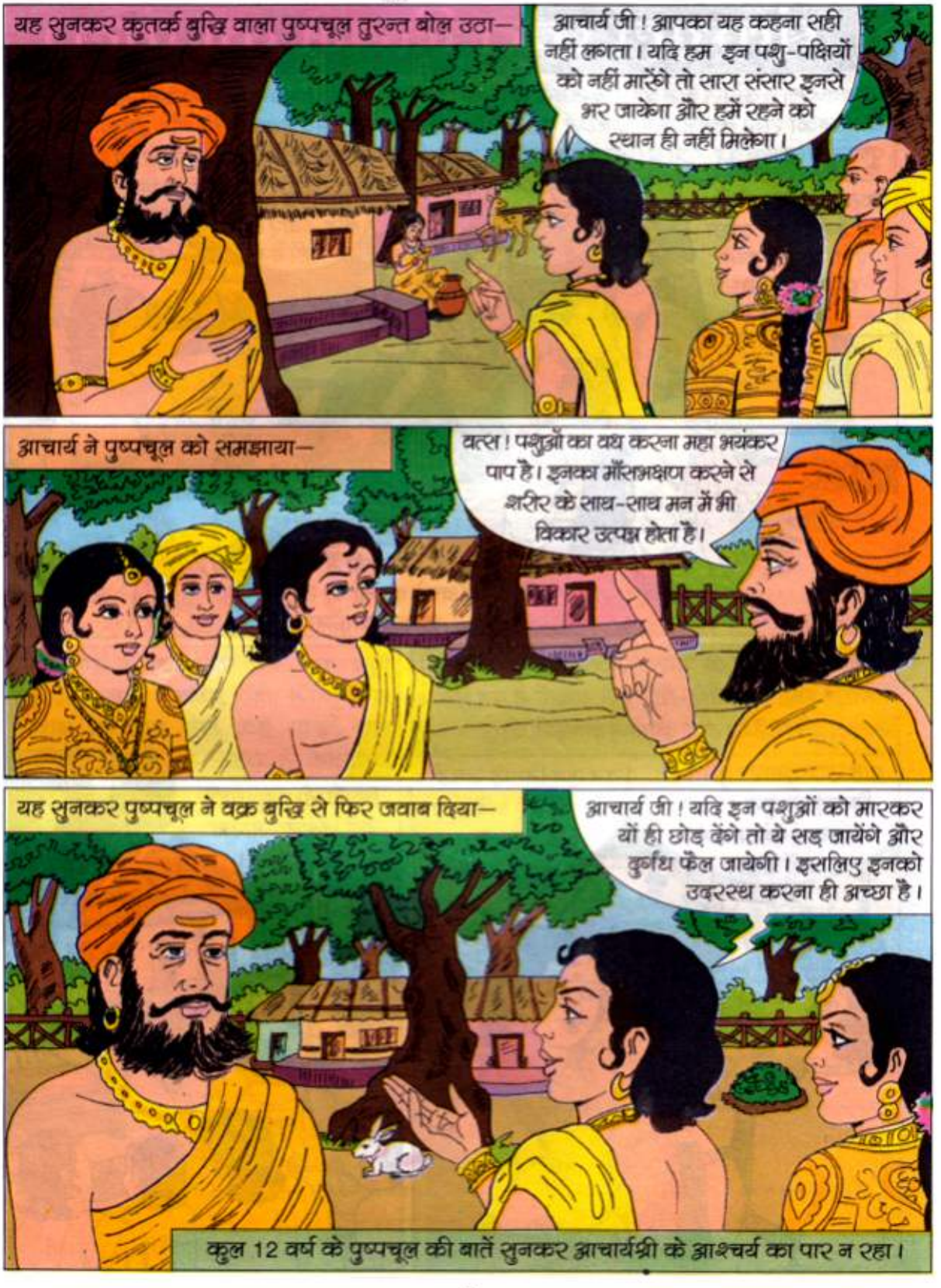
यह सुनकर कुतर्क बुद्धि वाला पुष्पचूल तुरन्त बोल उठा—
आचार्य जी ! आपका यह कहना सही नहीं लगता। यदि हम इन पशु-पक्षियों को नहीं मारेंगे तो सारा संसार इनसे भर जायेगा और हमें रहने को स्थान ही नहीं मिलेगा।
आचार्य ने पुष्पचूल को समझाया—
वत्स ! पशुओं का वध करना महा भयंकर पाप है। इनका माँसभक्षण करने से शरीर के साथ-साथ मन में भी विकार उत्पन्न होता है।
यह सुनकर पुष्पचूल ने वक्र बुद्धि से फिर जवाब दिया—
आचार्य जी ! यदि इन पशुओं को मारकर यों ही छोड़ देंगे तो ये सड़ जायेंगे और दुर्गंध फैल जायेगी। इसलिए इनको उदरस्थ करना ही अच्छा है।
कुल 12 वर्ष के पुष्पचूल की बातें सुनकर आचार्यश्री के आश्चर्य का पार न रहा।

अगले दिन वे राजा विमलयश के पास पहुँचे और पुष्पचूल के विचार सुनाकर कहा—

राजन्! राजकुमार तो हमेशा शास्त्र और नीति के विरुद्ध ही बातें करता है। उस पर अंकुश लगाइये।

आचार्यश्री! राजकुमार अभी कच्ची मिट्टी के समान है। आप उसे नीति और शास्त्र के वचनों से परिष्कृत कीजिए। वह अवश्य सुधर जायेगा।

आचार्यश्री के जाने के बाद राजा ने पुष्पचूल को बुलाकर समझाया—

पुत्र! जीवन में जीव-हत्या, माँसभक्षण पतन के कारण हैं। इससे हमेशा बचना चाहिए।

परन्तु पुष्पचूल पर पिता की बातों का कोई असर नहीं हुआ।

एक दिन गुरुकुल में आचार्य जी को पता चला कि पुष्पचूल जुआ खेलता है और चोरी भी करता है। उन्होंने उसे समझाने का प्रयत्न किया—

वत्स! यह दोनों दुर्व्यसन भयंकर पाप हैं। चोर की इस जन्म में तो दुर्दशा होती ही है, अगला जन्म भी बिगड़ जाता है।

पुष्पचूल ने कहा—

आचार्य जी! आपको क्या मालूम! चोरी तो एक बहुत ही बड़ी कला है। इसमें बड़ा साहस, धैर्य और सूझबूझ करनी पड़ती है। हर कोई यह कला नहीं सीख सकता।